HD-05

June - Examination 2017

B.A. Pt. III Examination

आधुनिक काव्य

Paper - HD-05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश : यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ,ब,स में विभक्त है। खण्ड 'अ' अतिलघूत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघूत्तरात्मक है और खण्ड 'स' में निबंधात्मक प्रश्न हैं।

(खण्ड – अ) **$10 \times 2 = 20$**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। आप अपने उत्तर को एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) (i) लंबी कविता की दो विशेषताएँ लिखिए।

(ii) 'राम की शक्ति पूजा' नामक लंबी कविता के रचनाकार का नाम लिखिए और उसक काव्य संग्रह का नाम भी बताइए जिसमें वह प्रथम बार संकलित हुई।

(iii) सुमित्रानंदन पंत की लंबी कविता 'परिवर्तन' किस काव्य संग्रह में संकलित है?

(iv) मुक्तिबोध की दो लंबी कविताओं के नाम लिखिए।

(v) अज्ञेय की प्रसिद्ध लंबी कविता का नाम बताइए।

(vi) सुदामा पाण्डेय धूमिल की बहुचर्चित लंबी कविता 'पटकथा' किस संग्रह में प्रकाशित हुई?

(vii) हरिवंश राय बच्चन को किस काव्य कृति पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ?

(viii) नागार्जुन और कुंवर नारायण द्वारा रचित एक–एक खण्डकाव्य के नाम लिखिए।

(ix) प्रबंधकाव्य के दो भेदों के नाम बताइए।

(x) 'आँसू' नामक खण्डकाव्य के रचयिता का नाम लिखिए।

(खण्ड – ब) **$4 \times 10 = 40$**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दिजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

2) लंबी कविता का स्वरुप विश्लेषण करते हुए उसकी परंपरा और विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

3) सुमित्रानंदन पंत की लंबी कविता 'परिवर्तन' का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

4) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की लंबी कविता 'सरोज स्मृति' के कला पक्ष पर सप्रमाणे विचार कीजिए।

5) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की लंबी कविता 'कुआनो नदी' के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

6) नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'प्रवाद पर्व' की केन्द्रीय विषय वस्तु की विवेचना कीजिए।

7) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जाना तो अथगिमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर।
शुचिते, पहनाकार चीनांशुक
रख सका न तुझे अत:दधिमुख।
क्षीण का न छीना कभी अन्न
मैं लख न सका वे दृग विपन्न
अपने आँसुओं अत:बिम्बित
देखे हैं अपने ही मुख–चित।

8) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

बावड़ी की उन घनी गहराइयों में शून्य
ब्रह्मराक्षस एक बैठा है
व भीतर से उमड़ती गूंज की भी गूंज
हड़बड़ाहट–शब्द पागल से।
गहन अनुमानिता
तन की मलिनता
दूर करने के लिए, प्रतिपल
पाप–छाया दूर करने के लिए, दिन–रात
स्वच्छ करने
ब्रह्मराक्षस
घिस रहा है देह

हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुंह छपाछप
खूब करके साफ
फिर भी मैल
फिर भी मैल।।

9) सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

देह पर पाषाण का
गुरु भार ढोते,
संतुलित करते उसे फिर
और फिर उससे
बराबर खेल करते
खुद हुआ पाषाण है वह।
कुछ नहीं उद्देश्य उसका
अर्थ उसका
ध्येय उसका
सिर्फ सक्रिय हर समय रहता
स्वचालित यंत्र जैसे
और वह अपनी महादयनीय स्थिति से
बेखबर है।
भाषा शून्य हृदय
दिमाग विचार सूना
और गायब कंठ स्वर हैं
व्यंग्य इससे
क्या बड़ा होगा
कि वह जग में अमर है।

(खण्ड – स) $2 \times 20 = 40$

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

10) हरिवंश राय बच्चन की लंबी कविता 'दो चट्टानें' की अनुभूति एवं अभिव्यंजना पक्ष पर विस्तृत प्रकाश डालें।

11) आधुनिकता का आशय स्पष्ट करते हुए आधुनिक काव्य की राजनीतिक, सामाजिक व साहित्यिक पृष्ठभूमि पर विचार करें।

12) खण्डकाव्य की स्वरूपगत विशेषताएँ बताते हुए उसकी परंपरा और विकास पर एक निबंध लिखिए।

13) गजानन माधव मुक्तिबोध की लंबी कविता 'ब्रह्मराक्षस' के भाव एवं कला पक्ष की सोदाहरण विवेचना कीजिए।